Geography Part-1 By:- Abhishek Kumar.

R.N. College Hajipur

18/07/2020

जपान

जपान के कृषि प्रदेशों की विवेचना करें।

Ⓐ परिचय

Ⓑ कृषि को प्रभावित करने वाले कारक

Ⓒ कृषि प्रदेशों का विकास

Ⓓ कृषि का प्रादेशिकरण

Ⓔ जपानी कृषि प्रदेशों की समस्या

Ⓐ परिचय :-

जपान को कृषि प्रदेशों में विभक्त करना एक जटिल कार्य है क्योंकि उधर से दक्षिण स्थलीय और जलवायविक विषमताओं के कारण फसलों के उत्पादन में भी विषमताएँ पायी जाती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी पर्वतीय क्रम और मध्यवर्ती मैदानी भाग की भाँति जपान में कोई विशेष भौतिक विभेद नहीं पाया जाता है लेकिन जपान में फसलों के उत्पादन में प्रादेशिक अंतर परिलक्षित होता है। यह महत्वपूर्ण अंतर तीन क्षेत्रों में पाया जाता है - प्रथम - मैदानों एवं घाटियों की जलोढ़ मिट्टी का सिंचित क्षेत्र, द्वितीय - शुष्क नदी वेदिकाओं और ऊँचे भागों में जहाँ जौ-ई, फल और सब्जियों की कृषि होती है और तृतीय -

के पर्वतीय ढलान और जो जंगल से ढके हैं।

③ कृषि को प्रभावित करने वाले कारक :-

जपान के कृषि को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं —

(क) जपान में खेतो का क्षेत्रफल छोटा है। किन्ही-2 खेतो का क्षेत्रफल 0.6 चौ (एक चौ = 2.5 एकड़) से भी कम हैं।

(ख) जपान की अधिकांश भूमि पर्वतीय और पहाड़ी है।

(ग) सघन कृषि के कारण कृषि क्षेत्रो की मिट्टी में उपजाऊ तत्वों का ह्रास हो जाता है।

(घ) जपान की कृषि पर ताप व वर्षा का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

(ङ) बढ़ती जनसंख्या एवं उद्योग प्रसार भी जपान की कृषि को प्रभावित करता है।

© कृषि प्रदेशों का विकास

कृषि प्रदेशों का विकास निम्न चरणों में हुआ -

(अ) 1850 ई के बाद
(ब) 1945 ई के बाद
(स) युद्धोत्तर काल के बाद

(अ) 1850 ई के बाद में

1850 ई के बाद आधुनिकीकरण और उद्योगिकरण की लहर का प्रभाव जपानी कृषि प्रदेशों पर पड़ा। नई-2 तकनीको के प्रयोग से कृषि में सुधार हुआ

सन् 1868 में भूमि स्वामित्व के ढांचे में परिवर्तन लाया गया जिसके फलस्वरूप अधिकांश लोगों का भूमि पर स्वामित्व हो गया इस प्रकार हॉकैडो प्रदेश, शेहोकू और क्यूशू प्रदेशों में वृहत स्तर पर धान की खेती की जाने लगी। जापान में सन् 1909 के बाद औद्योगिक उत्पादनों में तीव्रता आई।

(ब) 1945 ई के बाद :-

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात विशेषकर 1955 के बाद, 1945 की तुलना में कृषि में सुधार हुआ। इस काल में चुगोकू प्रदेश, किनकी प्रदेश होकुरिकू प्रदेश एवं तोशान प्रदेशों में कृषि का विकास तेजी से हुआ।

(स) युद्धोत्तर काल के बाद :-

युद्ध से पूर्व तक जापानी प्रदेशों के कृषकों की आय स्तर में हुए सुधार को युद्ध की विभीषिका ने कमी ला दी। फिर भी सरकारी नीति ने भी सस्ते ब्याज पर ऋण एवं वित्तीय सहायता प्रदान की एवं समय-समय पर तकनीकी ज्ञान, तथ्यों नये-नये बीजों से भी अवगत कराती रही। स्पष्ट है कि अनेक प्रकार की सुविधाओं के कारण जापानी कृषकों की दशा में संतोषजनक सुधार हुआ।

(D) कृषि का प्रादेशीकरण :-

भूगोलवेत्ता "ट्रिन्सवर्थ" के विभाजन को ध्यान में रखते हुए "ओगासावरा" ने जापान को दो बड़े तथा अनेक मध्यम उपकृषि

प्रदेशों में विभक्त किया है -

(1) प्राचीन जापान या मुख्य जापान
(2) होकैडो

1. प्राचीन जापान :- जलवायविक विषमताओं, फसलों की सघनता, खेतों के आकार एवं उत्पादन के आधार पर इसे तीन मंडलों और अनेक प्रदेशों में विभक्त किया गया है -

(अ) केन्द्रीय मंडल
(ब) परिधीय मंडल
(स) सीमांतीय मंडल

(अ) केन्द्रीय मंडल

इसे जापान का हृदय स्थल भी कहा जाता है जो 7वीं शताब्दी में सर्वप्रथम आबाद हुआ। अधिक आबादी के कारण यहाँ खेतों के आकार अत्यंत छोटे हो गये हैं जिससे औसत क्षेत्रफल 1.25 एकड़ है। उच्चावच, विभाजित आकार, जलवायु कृषि की सघनता आदि कारकों के आधार केन्द्रीय मंडल को 7 उपकृषि प्रदेशों में विभक्त किया जा सकता है -

1. सेतोयूची-किनकी कृषि प्रदेश
2. उत्तरी क्यूशू कृषि प्रदेश
3. चुक्यो कृषि प्रदेश
4. तोकाई कृषि प्रदेश
5. पश्चिमी कान्टो कृषि प्रदेश
6. टोसान कृषि प्रदेश
7. होकुरिकू कृषि प्रदेश

(ब) परिधीय मंडल :-

इस मंडल के अंतर्गत दक्षिणी शिकोकू और काई के पर्वतीय क्षेत्र, जापान सागर

का तटीय भाग और मध्य क्यूशू प्रदेश आते हैं।
इस मंडल को चार उपकृषि प्रदेशों में विभक्त किया गया है-

1. मध्य-क्यूशू प्रदेश
2. सैन-इन कृषि प्रदेश
3. दक्षिणी शिकोकू और काई कृषि प्रदेश

स) सीमांतीय मंडल :-

इस मंडल का विकास केन्द्रिय मंडल के बाद तोकुगावा के समय में हुआ अतः यहाँ केन्द्रिय मंडल की भाँति न तो सघन कृषि की जाती है और न अधिक विकास है।

सीमांतीय मंडल को दो उपकृषि मंडल में विभाजित किया जा सकता है-

(i) दक्षिणी क्यूशू कृषि प्रदेश
(ii) होक्केडो कृषि प्रदेश

द) जापानी कृषि-प्रदेशों की समस्या :-

विकसित प्रदेश होने के बावजूद जापानी कृषि की कुछ आधारी समस्याएँ हैं। तीव्र औद्योगिकरण एवं नवीकरण के कारण कृषि योग्य भूमि का दिन-प्रतिदिन ह्रास हो रहा है। इसके अतिरिक्त जलवायु कृषि क्षेत्र (केवल 15%) की कमी और उपजाऊ मिट्टी अच्छी कृषि की प्रगति में बाधक होते हैं। यहाँ पर खेतों का आकार छोटा होने के कारण मशीनों से सुगमतापूर्वक कार्य नहीं हो सकता है। इसके अतिरिक्त कृषि-क्षेत्रों पर बढ़ते नगरीय अधिपत्य के कारण और अधिक समस्या उत्पन्न होती जा रही है।